**जो खेल में खबर ना हककी, तो निसबत खबर क्यों होए।**
**हक आसिक निसबत मासूक, वाहेदत में ना दोए।। ३७ ।।**

खेल में किसी को पारब्रह्म की ही खबर नहीं है तो श्री श्यामाजी महारानी की कैसे हो सकती है? क्योंकि परमधाम में श्री राजश्यामाजी आशिक-माशूक की तरह एक हैं, दो नहीं।

**ए बात सुने जो खेल में, बड़ा अचरज होवे तिन।**
**किन पाई ना तरफ हककी, ए तो हक मासूक वतन।। ३८ ।।**

खेल में जो इस बात को सुनता है, उसे बड़ी हैरानी होती है, क्योंकि किसी ने आज दिन तक श्री राजजी के ठिकाने को नहीं जाना था। फिर परमधाम तो श्री राजजी, श्यामाजी और रूहों का घर है। इसे कौन, कैसे जाने?

**तीन सूरत महंमद की, गुझ हकका जानें सोए।**
**हक जानें या निसबती, और कोई जानें जो दूसरा होए।। ३९ ।।**

सिर्फ मुहम्मद की तीन सूरतें (बसरी, मलकी और हकी) ही श्री राजजी महाराज के छिपे रहस्यों को जानती हैं। इनके बिना कोई और है ही नहीं, तो कौन कैसे जाने?

**वाहेदत की ए पेहेचान, अर्स दिल कह्या मोमिन।**
**मासूक कह्या महंमद को, जो अर्स में याके तन।। ४० ।।**

वाहेदत की यही पहचान है कि श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल में अर्श करके बैठे हैं। उनकी परआत्मा परमधाम में होने से श्री राजजी महाराज ने श्री श्यामाजी को माशूक कहा है।

**महामत कहे ए मोमिनों, ए निसबत इस्क सागर।**
**ल्यो प्याले हक हुकमें, पिओ फूल भर भर।। ४१ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह श्री श्यामाजी और रूहों के निसबत का सागर है। अब श्री राजजी महाराज के हुकम से इश्क के प्याले भर-भरकर पीओ।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। १०८३ ।।

## सागर आठमा मेहेर का

**और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत।**
**लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत।। १ ।।**

रंग महल की पूरब की दिशा में सर्वरस सागर है। यही श्री राजजी महाराज की मेहर का निज स्वरूप है, जिसकी अपार शोभा, लहरें और सुख की खूबियां हैं।

**हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग।**
**इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग।। २ ।।**

हुकम श्री राजजी के मेहर के अधीन है। जोश श्री राजजी का अंग ही है। इश्क और जागृत बुद्धि धनी की मेहर से आती है।

Nijanand App

**पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत।**
**हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत।। ३ ।।**

जहां श्री राजजी की मेहर होती है फिर वहां और क्या चाहिए? धनी की मेहर भी वहीं होती है जहां उनकी अंगनाएं हैं।

**मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम।**
**जलूस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम।। ४ ।।**

श्री राजजी महाराज की मेहर मूल परमधाम से ही है और उनका हुकम भी वहीं से हमारे साथ है। हुकम, साहिबी और सभी कुछ मोमिनों के वास्ते लाए हैं। श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं के लिए कभी भी किसी तरह की कमी नहीं करते।

**ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर।**
**जाथें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर।। ५ ।।**

श्री राजजी महाराज अपनी मेहर से रूहों को सुख की लज्जत देना चाहते थे, इसलिए यह खेल बनाया। अब इस खेल में जो कुछ भी हो रहा है, वह सब श्री राजजी महाराज की मेहर का स्वरूप है। जिस किसी से भी श्री राजजी महाराज की मेहर अलग हो जाती है, उसके लिए सारा संसार जहर हो जाता है।

**दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखें ऊपर का जहूर।**
**जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखिर होत हक से दूर।। ६ ।।**

श्री राजजी महाराज की जाहिरी और बातूनी मेहेर दोनों खेल में दिखाई देती हैं, परन्तु संसार के यह लोग ऊपर की जाहिरी मेहर को ही देखते हैं। जिन्हें श्री राजजी महाराज की बातूनी मेहर नहीं मिलती, वह श्री राजजी से दूर ही होते हैं, अर्थात् वह मोमिन नहीं हैं।

**नोट**—श्री राजजी महाराज की जाहिरी मेहर वजूद के सुख के वास्ते होती है। बातूनी मेहर (जागृत बुद्धि का ज्ञान) आत्मा के वास्ते परमधाम के सुख के वास्ते होती है।

**मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहें।**
**आखिर लग तरफ धनी की, कमी कछुए आवत नाहें।। ७ ।।**

वास्तव में सच्ची मेहर तो बातूनी है जो बाहर और अन्दर (माया का, आत्मा का) सब सुख देती है। इस बातूनी मेहर में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती।

**मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व।**
**पिंड ब्रह्मांड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत।। ८ ।।**

जिन पर श्री राजजी महाराज की मेहर हो जाती है उनके पिण्ड, ब्रह्माण्ड, पांचों तत्व सब कुछ मेहर से भरे दिखाई देते हैं।

**दुख रूपी इन जिमी में, दुख न काहूं देखत।**
**बात बड़ी है मेहेर की, जो दुख में सुख लेवत।। ९ ।।**

इस दुःख की जमीन में कोई भी दुःख नहीं देखना चाहता। यह तो श्री राजजी की मेहर है कि हम यहां दुःख देखते हुए भी परमधाम के सुख ले रहे हैं।

Nijanand App

**सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर।**
**दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर।। १० ।।**

परमधाम में तो सुख सदा ही है, परन्तु एक रस होने से सुख का स्वाद नहीं आता। अब दुःख देखा है, तो उस अखण्ड सुख के स्वाद का पता चला है। यह श्री राजजी महाराज के मेहर से जानकारी मिली है।

**इन दुख जिमी में बैठके, मेहेरें देखें दुख दूर।**
**कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर।। ११ ।।**

इस दुःख भरे संसार की जमीन में बैठकर श्री राजजी महाराज की मेहर से सब दुःख दूर हो गए। उनकी ही मेहर से अखण्ड सुख मिल गए।

**मैं देख्या दिल विचार के, इस्क हक का जित।**
**इस्क मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित।। १२ ।।**

मैंने दिल में विचार करके देखा कि श्री राजजी महाराज की मेहर से इश्क आता है। जहां इश्क आता है वहां मेहर पहले से ही होती है।

**अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक।**
**मेहेर सब विध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक।। १३ ।।**

श्री राजजी महाराज अपनी मेहर से ही जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान जो बेसक इलम है, देते हैं। उनकी मेहर से ही हुकम और जोश सब कुछ मिल जाता है।

**जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावें वजूद।**
**गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूंकत माहें बूद।। १४ ।।**

श्री राजजी महाराज जिसको अपनी मेहर में लेते हैं, तो उसका तन भी पहले से ही अपने जैसा बना देते हैं। उनकी गुण, अंग, इन्द्रियां सब मेहर की हो जाती हैं। इस झूठे संसार में भी उस रूह पर अपनी मेहर करते हैं।

**मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चंवर सिर छत्र।**
**सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र।। १५ ।।**

जिस पर श्री राजजी महाराज की मेहर हो जाती है, तो उन्हीं को मेहर का सिंहासन मिलता है और उन्हीं पर चंवर ढुलाएं जाते हैं। मेहर का छत्र लगाया जाता है। सब साजो-समान मेहर का ही होता है, अर्थात् जिसके अन्दर श्री राजजी महाराज विराजमान हो जाते हैं, तो वह तन श्री राजजी का ही हो जाता है। यह सब शोभा श्री राजजी की ही होती है।

**बोली बोलावें मेहेर की, और मेहेरै का चलन।**
**रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन।। १६ ।।**

फिर वह तन श्री राजजी महाराज की ही बोली बोलने लगता है और उसकी रहनी भी मेहर की हो जाती है। रात-दिन बोलना और रहनी दोनों मेहरमयी होते हैं। इस तरह से रूहों का मिलन भी मेहर से होता है।

Nijanand App

**बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकमं।**
**रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिएं मेहेर रस इस्क इलम।। १७ ।।**

श्री राजजी महाराज की मेहर और हुकम से ही रूहें उनकी सेवा और जिक्र (चर्चा) करती हैं। श्री राजजी महाराज की मेहर से रूहें उनके चरणों में आती हैं और इश्क और इलम का रस पीती हैं।

**जित मेहेर तित सब है, मेहेर अव्वल लग आखिर।**
**सोहोबत मेहेर देवहीं, कहूं मेहेर सिफत क्यों कर।। १८ ।।**

मेहर जहां होती है वहां शुरू से आखिर तक मेहर ही होती रहती है। श्री राजजी महाराज की मेहर से ही उनके चरण प्राप्त होते हैं (उनकी संगति मिलती है)। इसलिए मेहर की महिमा कैसे गाएं?

**ए जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत।**
**सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत।। १९ ।।**

इस मेहर के सागर में बातूनी और जाहिरी दोनों तरह के सुख हैं। जहां श्री राजजी की मेहर होती है, वहां हर तरह के सुख होते हैं।

**बीच नाबूद दुनी के, आई मेहेर हक खिलवत।**
**तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत।। २० ।।**

इस मिटने वाली दुनियां में श्री राजजी महाराज की मेहर से परमधाम की रूहें श्री राजजी, श्री श्यामाजी सब खेल में आए हैं। जिनकी कृपा से सारे जगत के लोगों को अखण्ड मुक्ति मिली (मिलेगी)।

**बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोंचत।**
**ए मेहेर हक की बातूनी, नजर माहें बसत।। २१ ।।**

श्री राजजी महाराज की ऐसी मेहर की सिफत का वर्णन कैसे करूं? यह श्री राजजी महाराज की बातूनी मेहर है, जो सदा उनकी नजर में रहती है (नजरे करम का स्वरूप है)।

**ए मेहेर करत सब जाहेर, सबका मता तोलत।**
**जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत।। २२ ।।**

श्री राजजी महाराज की मेहर से ही सब छिपा रहस्य खुल जाता है और सबके ज्ञान का पता लग जाता है। आज तक जिस परमधाम और पारब्रह्म को सुना नहीं था, वह सब हकीकत मेहर से खुल जाती है।

**बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत हक के दिल।**
**जाको दिल में लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल।। २३ ।।**

श्री राजजी महाराज की मेहर जो उनके दिल में रहती है, उसका कैसे वर्णन करूं? क्योंकि श्री राजजी महाराज जिसको दिल में ले लेते हैं, वहां सभी न्यामतें एक साथ आ जाती हैं।

**बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक।**
**जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक।। २४ ।।**

ऐसी मेहर, जो श्री राजजी महाराज के अन्दर बसती है, उसका वर्णन कैसे करूं? जिनकी दुआओं पर, बन्दगी पर, अर्जी पर श्री राजजी की मेहर हो जाती है, उनको अपने अनुसार बख्शीश देते हैं।

Nijanand App

**बात बड़ी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब।**
**निमख ना छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहा कहूं अब।। २५ ।।**

इस तरह से मेहर की बड़ी महिमा है। जहां मेहर होती है वहीं सब कुछ होता है। फिर एक पल भर श्री राजजी महाराज उनको अपनी नजर से दूर नहीं करते। अब इसके ऊपर क्या कहें?

**जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर।**
**मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर।। २६ ।।**

जहां श्री राजजी महाराज अन्दर बैठे हों, वहीं उनकी नजर होती है और वहीं उनकी मेहर होती है। मेहर के बिना मोमिनों को सारा संसार जहर के समान लगता है।

**बात बड़ी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर।**
**अंकूर सोई हक निसबत, माहें बसत तजल्ला नूर।। २७ ।।**

मेहर की बात बहुत बड़ी है, परन्तु मेहर बिना अंकूर के नहीं होती। अंकूर वह हैं जो श्री राजजी महाराज के अंग हैं। वह परमधाम में रहते हैं।

**ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम।**
**मेहेर रेहेत नूर बल लिए, तहां हक इस्क इलम।। २८ ।।**

जैसे श्री राजजी महाराज की मेहर होती है, वैसे ही जोश और हुकम मिल जाते हैं। श्री राजजी महाराज की मेहर जागृत बुद्धि का स्वरूप होती है, इसलिए इश्क और इलम वहां आ जाते हैं।

**मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम।**
**मेहेर इस्क हक अंग है, मेहेर इस्क प्रेम काम।। २९ ।।**

श्री राजजी महाराज की मेहर मीठे सुख का सागर है और रहनी में ही रूहों को आराम मिलता है। मेहर और इश्क श्री राजजी के ही स्वरूप हैं और मेहर से ही श्री राजजी का प्रेम (इश्क) मिलता है।

**काम बड़े इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक।**
**मेहेर होत जिन ऊपर, ताए देत आप माफक।। ३० ।।**

श्री राजजी महाराज की मेहर के बहुत बड़े काम हैं, क्योंकि जिन पर धनी की मेहर हो जाती है, उसको अपने अनुसार ही बना देते हैं।

**मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमिन।**
**मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फरिस्तन।। ३१ ।।**

श्री राजजी महाराज की मेहर से ही खेल बना है और मेहर से ही मोमिन खेल देखने के वास्ते आए हैं। मेहर से ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि मिली हैं।

**मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान।**
**कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान।। ३२ ।।**

श्री राजजी की मेहर से ही रसूल साहब उनका सन्देश कुरान में लेकर आए हैं। उनकी मेहर से ही श्री श्यामा महारानी तारतम कुंजी लाए हैं। मेहर से ही श्री प्राणनाथजी श्री राजजी महाराज की पहचान करा रहे हैं।

Nijanand App

**दई मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत।**
**मेहेरें दई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत।। ३३ ।।**

मुहम्मद की तीनों सूरतें (बसरी, मलकी और हकी) मेहर से आई हैं। मेहर से ही तारतम ज्ञान की कुंजी तथा छिपे रहस्यों को खोलने की कला इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को मिलीं जिन्होंने हकीकत के ज्ञान को जाहिर किया।

**सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखिरत।**
**मेहेरें समझे मोमिन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत।। ३४ ।।**

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने श्री राजजी महाराज की मेहर से कुरान के छिपे भेदों को खोल दिया और आखिरत के समय के सात निशानों की पहचान कराई। मेहर से ही मोमिन को अपने घर खिलवत-खाने की समझ आई।

**ए मेहेर मोमिनों पर, एही खासल खास उमत।**
**दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनों बरकत।। ३५ ।।**

इन्हीं मोमिनों पर श्री राजजी महाराज की मेहर हुई, जो उनकी खासल खास जमात (रूहें-मोमिन) हैं। अब इन मोमिनों की बरकत से ही सारे संसार को अखण्ड मुक्ति मिलेगी।

**मेहेरें खेल देख्या मोमिनों, मेहेरें आए तले कदम।**
**मेहेरें कयामत करके, मेहेरें हंसके मिले खसम।। ३६ ।।**

श्री राजजी महाराज की मेहर से ही मोमिनों ने खेल देखा। अब मेहर से ही उनके चरणों तले आ गए। मेहर से ही दुनियां को अखण्ड मुक्ति देकर हंसते हुए परमधाम में श्री राजजी से मिलो।

**मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार।**
**मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नहीं सुमार।। ३७ ।।**

मेहर की बातें तो तब कहें जब मेहर की कोई सीमा हो। श्री राजजी महाराज की मेहर से सब न्यामतों को मापा, पर मेहर बेशुमार है जो नापी नहीं जा सकती।

**जो मेहेर ठाढ़ी रहे, तो मेहेर मापी जाए।**
**मेहेर पल में बढ़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए।। ३८ ।।**

यदि मेहर खड़ी रहे तो इसे नापा जाए। मेहर तो एक पल में करोड़ गुना बढ़ जाती है तो इसको कैसे नापें?

**मेहेरें दिल अर्स किया, दिल मोमिन मेहेर सागर।**
**हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखो मोमिनों मेहेर कादर।। ३९ ।।**

श्री राजजी महाराज मेहर से ही मोमिनों के दिल में बैठे हैं, इसलिए मोमिनों के दिल भी मेहर के सागर हो गए हैं। श्री राजजी महाराज मेहर को लेकर मोमिनों के दिल में बैठे हैं। ऐसी बड़ी महिमा मोमिनों की है।

**बात बड़ी है मेहेर की, हक के दिल का प्यार।**
**सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार।। ४० ।।**

मेहर की बड़ी भारी महिमा है। यह श्री राजजी महाराज के दिल के प्यार का स्वरूप है, इसलिए श्री राजजी महाराज का दिल या मोमिन ही मेहर की शोभा जानते हैं।

Nijanand App

**जो एक वचन कहूं मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए।**
**अपार उमर अपार जुबांए, मेहेर को हिसाब न होए।।४१ ।।**

श्री राजजी महाराज की मेहर का एक वचन (शब्द) भी कहती हूं तो यह भी उनकी मेहर समझना। यदि अनगिनत उम्र और बेशुमार जबानों से वर्णन करूं तो भी वर्णन नहीं होता।

**निपट बड़ा सागर आठमा, ए मेहेर को नीके जान।**
**जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेर की होय पेहेचान।।४२ ।।**

यह आठवां मेहर का सागर बहुत बड़ा है। इसको अच्छी तरह समझने के लिए श्री राजजी महाराज की मेहर ही हो जाए, तो मेहर समझी जा सकती है।

**सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब।**
**ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कई कोट करूं किताब।।४३ ।।**

सात सागरों का वर्णन तो कर दिया, पर आठवां सागर तो बिना हिसाब का है। इसका वर्णन करते-करते करोड़ों किताबें लिख डालूं तो भी इस मेहर का पार नहीं मिलता।

**ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर।**
**ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर।।४४ ।।**

इस मेहर को वह मोमिन ही जानते हैं, जिन पर श्री राजजी महाराज की मेहर है। उन मोमिनों को हक की मेहर के बिना सारी दुनियां जहर के समान लगती है।

**महामत कहे ए मोमिनों, ए मेहेर बड़ा सागर।**
**सो मेहेर हक कदमों तले, पिओ अमी रस हक नजर।।४५ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! यह मेहर का सागर बहुत बड़ा है। अब तुम श्री राजजी महाराज की मेहर से उनके चरणों के तले आकर श्री राजजी महाराज की नजरे करम से अमृत रस पीओ।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ११२८ ।।

।। प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ।।

।। प्रकरण ।। ४३९ ।। चौपाई ।। १४१६५ ।।

**।। सागर सम्पूर्ण ।।**

Nijanand App